

II. DATE OF THE SŪTA-SAMHITĀ

About the date of the Sūta-Saṁhitā nothing definite can be said as is the case with most of the extant works in ancient Indian Literature. Nevertheless, attempts have been made to unravel the mystery of the past. The dates so far assigned by scholars should, however, be taken with some reservations. A very old manuscript of this Purāṇa written in Gupta character was discovered in Nepal by Cecil Bendall and Haraprasada Shastri, both of whom carefully studied the palaeography of the manuscript and came to the conclusion that it must have been copied before 659 A.D.²⁴ The discovery of the manuscript drew the attention of many scholars who jumped to the conclusion that the Skanda-Purāṇa must be older than they had hitherto supposed. On the assumption that the Sūta-Saṁhitā formed an integral portion of the manuscript of this Purāṇa, M.Narayanawami Iyer, the only scholar to write an article exclusively on the Sūta-Saṁhitā, pushed back the date of the Skanda-Purāṇa to the beginning of the Christian era.²⁵ The German Indologist, H.W.Schomerus, eager to

[p. 9]

²⁴ Haraprasada Shastri, A Catalogue of Palm-leaf and Selected Paper Mss. belonging to the Durbar Library, Nepal, 1905, p.52(preface)

²⁵ "The Sūta-Saṁhitā, perhaps the most favourite book among Indian Saṁyāsins, forms part of the huge Skanda-Purāṇa.... This Purāṇa, owing to its strong Śaivite bias and the large number of Śaivite shrines it mentions, has generally been put in the ninth or 10th century A.C. by Western scholars. And it must have been with a shock of surprise that they would have received

(continued)

सूतसंहिता का समय

प्राचीन भारतीय साहित्य में किसी भी कृति का निश्चित समय बता पाना सम्भव नहीं है। 'सूतसंहिता' के समय निर्धारण के विषय में भी यही स्थिति है। विद्वानों ने इसके लिए अतीत के गर्भ को उद्घाटित करने का यथासंभव प्रयास किया है। हरप्रसाद शास्त्री एवं सेशिलबेण्डल ने नेपाल लाइब्रेरी में स्कन्दपुराण की गुप्तकालीन पाण्डुलिपि खोज निकालने में सफलता पायी। यह पाण्डुलिपि अब तक उपलब्ध पुराण की सभी पाण्डुलिपियों में

[p. 23]

प्राचीनतम है। दोनों विद्वानों ने इसका पाण्डुलिपिशास्त्रीय अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि निश्चय ही यह पाण्डुलिपि ६५९ ई. से पूर्व की है^१। इस प्राचीन पाण्डुलिपि की खोज ने अनेक विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि स्कन्दपुराण उन सभी तिथियों से प्राचीन है, जो अबतक मानते रहे हैं। इस पाण्डुलिपि में आभ्यन्तरिक अंग के रूप में सूतसंहिता भी विद्यमान है, इस धारणा के आधार पर एम.नारायण स्वामी अय्यर ने सूतसंहिता पर एक विशेष निबन्ध में स्कन्दपुराण का काल ई. शती का प्रारम्भ माना^२। भारतीय विद्वानों के अतिरिक्त जर्मन विद्वान् एच.डब्लू.सोमरस

१. ए कैटेलाग आफ पाम लीफ एण्ड सेलेक्टेड पेपर मैन्युस्क्रिप्ट्स विलांगिंग टु दि दरबार लाइब्रेरी नेपाल, १९०५, पृ. ५२ मू.

२. एम.ना.स्वा. अय्यर—दि सूतसंहिता आन दि शैव आगमाज, पृ. १३४।